



Original Article

प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित विभिन्न अलंकार : एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक

अध्ययन

डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह

पी.जी.टी. – (इतिहास)

आर. एन. सीनियर सेकेंडरी स्कूल, जाखिम औरंगाबाद (बिहार)

Manuscript ID:

IJAAR-130131

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 1

September- October 2025

Pp. 222 - 230

Submitted: 14 Sept 2025

Revised: 25 Oct 2025

Accepted: 27 Oct 2025

Published: 31 Oct 2025

Corresponding Author:

डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI:

10.5281/zenodo.21923673

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21923673>



Creative Commons



सारांश:

प्राचीन भारतीय समाज अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक परंपराओं के कारण विश्व इतिहास में एक विशिष्ट और गौरवपूर्ण स्थान रखता है। भारतीय सभ्यता में साहित्य केवल मनोरंजन अथवा भावाभिव्यक्ति का माध्यम नहीं था, बल्कि वह ज्ञान, धर्म, दर्शन, नैतिकता, सामाजिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक चेतना के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार का सशक्त साधन भी था। भारतीय साहित्य की इसी गौरवशाली परंपरा में अलंकारों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अलंकारों ने भाषा को सौंदर्य, माधुर्य, प्रभावशीलता, सरसता तथा कलात्मक अभिव्यक्ति की शक्ति प्रदान करते हुए साहित्य को अधिक आकर्षक, भावपूर्ण और संप्रेषणीय बनाया। वैदिक साहित्य से लेकर रामायण, महाभारत, पुराणों, संस्कृत महाकाव्यों तथा उत्तरवर्ती काव्य परंपराओं तक अलंकारों का व्यापक एवं प्रभावशाली प्रयोग देखने को मिलता है। इनके माध्यम से तत्कालीन समाज की धार्मिक आस्थाएँ, सांस्कृतिक मान्यताएँ, सामाजिक संरचनाएँ, नैतिक आदर्श, राजनीतिक दृष्टिकोण तथा जीवन-दर्शन अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त हुए हैं। अलंकारों ने न केवल साहित्यिक सौंदर्य को समृद्ध किया, बल्कि समाज के सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित विभिन्न अलंकारों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास-क्रम, सामाजिक उपयोगिता, साहित्यिक महत्ता तथा सांस्कृतिक योगदान का समालोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: अलंकार, प्राचीन भारतीय समाज, संस्कृत साहित्य, काव्यशास्त्र, सांस्कृतिक परंपरा, साहित्यिक सौंदर्य, सामाजिक चेतना।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह. (2025). प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित विभिन्न अलंकार : एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(1), 222 - 230.

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21923673>



प्रस्तावना:

प्राचीन भारत ज्ञान, दर्शन, संस्कृति और साहित्य की दृष्टि से विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध सभ्यताओं में से एक रहा है। भारतीय साहित्यिक परंपरा का इतिहास वैदिक युग से प्रारंभ होकर विभिन्न कालखंडों में निरंतर विकसित, परिष्कृत और समृद्ध होता रहा। इस दीर्घ साहित्यिक यात्रा में अलंकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकारों को काव्य की शोभा, प्रभावोत्पादकता तथा कलात्मक अभिव्यक्ति का प्रमुख आधार माना गया है। जिस प्रकार आभूषण मानव शरीर की सुंदरता को बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकार भाषा और साहित्य को सौंदर्य, माधुर्य, ओज तथा अभिव्यक्ति की विशिष्ट शक्ति प्रदान करते हैं।¹

प्राचीन भारतीय समाज में साहित्य केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं था, बल्कि वह समाज के धार्मिक विश्वासों, नैतिक आदर्शों, सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक संरचनाओं तथा जीवन-दृष्टि का प्रतिनिधि भी था। साहित्य में प्रयुक्त अलंकार तत्कालीन समाज की मानसिक संरचना, सौंदर्यबोध, सांस्कृतिक चेतना तथा बौद्धिक परिपक्वता को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करते हैं। वैदिक ऋषियों से लेकर महाकाव्यकारों, पुराणकारों तथा संस्कृत के महान कवियों तक सभी ने अपने साहित्य में अलंकारों का सशक्त प्रयोग

करते हुए समाज के विविध पक्षों का सजीव, प्रभावपूर्ण और कलात्मक चित्रण किया है।²

प्राचीन भारतीय समाज प्रकृति, धर्म और संस्कृति के साथ गहरे रूप में जुड़ा हुआ था। इस समाज की धार्मिक आस्थाएँ, सामाजिक परंपराएँ, नैतिक मूल्य तथा सांस्कृतिक आदर्श साहित्य में विविध अलंकारों के माध्यम से अभिव्यक्त हुए हैं। अलंकारों ने साहित्य को केवल सौंदर्य ही प्रदान नहीं किया, बल्कि जटिल दार्शनिक विचारों, धार्मिक अवधारणाओं और सामाजिक संदेशों को सरल, आकर्षक एवं प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही कारण है कि भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकारों को काव्य का महत्वपूर्ण अंग माना गया है।

संस्कृत साहित्य में अलंकारों का व्यवस्थित विकास आचार्य भामह, दंडी, वामन, उद्भट, आनंदवर्धन, मम्मट तथा विश्वनाथ जैसे विद्वानों के प्रयासों से हुआ। इन आचार्यों ने अलंकारों के स्वरूप, प्रकार, उपयोगिता तथा साहित्यिक महत्व का विस्तृत विवेचन किया। परिणामस्वरूप भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकार सिद्धांत एक स्वतंत्र एवं महत्वपूर्ण अध्ययन-विषय के रूप में स्थापित हुआ।³

वास्तव में अलंकार केवल साहित्यिक सौंदर्य के उपकरण नहीं थे, बल्कि वे भारतीय समाज की सांस्कृतिक संवेदना, धार्मिक आस्था, दार्शनिक चिंतन, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक आदर्शों के प्रभावी अभिव्यक्ति-माध्यम भी थे। इनके माध्यम से



साहित्य ने जनमानस को सौंदर्यबोध प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसलिए प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित विभिन्न अलंकारों का अध्ययन केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी परिप्रेक्ष्य में प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित विभिन्न अलंकारों तथा उनके बहुआयामी महत्व का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है।

प्राचीन भारतीय समाज में अलंकार की अवधारणा:

भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकार को काव्य-सौंदर्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। ‘अलंकार’ शब्द का सामान्य अर्थ है— शोभा या सौंदर्य प्रदान करने वाला साधन। जिस प्रकार आभूषण मानव शरीर की सुंदरता को बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकार भाषा और साहित्य को सौंदर्य, माधुर्य, प्रभावशीलता तथा कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। संस्कृत काव्यशास्त्र के प्रमुख आचार्यों—भामह, दंडी, उद्भट, वामन, आनंदवर्धन, मम्मट तथा विश्वनाथ—ने अलंकारों के स्वरूप, महत्व और साहित्यिक उपयोगिता पर विस्तारपूर्वक विचार किया है।² उनके अनुसार

अलंकार काव्य की अभिव्यक्ति को अधिक प्रभावशाली, आकर्षक और हृदयग्राही बनाते हैं।

प्राचीन भारतीय समाज में अलंकार केवल साहित्यिक सौंदर्य-वर्धन के साधन नहीं थे, बल्कि वे सांस्कृतिक, धार्मिक तथा दार्शनिक अभिव्यक्ति के प्रभावी माध्यम भी थे। इनके माध्यम से समाज की धार्मिक आस्थाओं, नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक आदर्शों तथा जीवन-दर्शन को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया जाता था। इस प्रकार अलंकार भारतीय साहित्य और संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में विकसित हुए तथा उन्होंने समाज की बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वैदिक समाज और अलंकार:

प्राचीन भारतीय समाज का प्रारंभिक एवं प्रामाणिक स्वरूप वैदिक साहित्य में परिलक्षित होता है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद भारतीय ज्ञान-परंपरा के प्राचीनतम स्रोत हैं, जिनमें अनेक ऐसे साहित्यिक प्रयोग मिलते हैं जिन्हें आगे चलकर अलंकारों के रूप में व्यवस्थित और परिभाषित किया गया। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति, देवताओं, मानव जीवन तथा ब्रह्मांडीय शक्तियों का वर्णन अत्यंत कलात्मक, भावपूर्ण और प्रभावशाली शैली में किया है।

वैदिक समाज प्रकृति के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था। सूर्य, अग्नि, वायु, उषा, इंद्र तथा



अन्य देवताओं का वर्णन करते समय ऋषियों ने ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो सौंदर्य, श्रद्धा और भावनात्मक गहराई से परिपूर्ण थी। इन साहित्यिक अभिव्यक्तियों ने न केवल धार्मिक भावनाओं को सशक्त बनाया, बल्कि भाषा को भी कलात्मक गरिमा प्रदान की। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में अलंकार केवल काव्य-सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि धार्मिक अनुभवों, आध्यात्मिक चिंतन और सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति के लिए भी महत्वपूर्ण माने जाते थे।

धार्मिक जीवन में अलंकारों की भूमिका:

प्राचीन भारतीय समाज का मूल आधार धर्म था। धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पद्धति, तप, साधना और आध्यात्मिक चिंतन जीवन के अभिन्न अंग थे। ऐसी स्थिति में धार्मिक साहित्य को अधिक प्रभावशाली और जनग्राह्य बनाने के लिए अलंकारों का व्यापक प्रयोग किया गया। वैदिक मंत्रों, उपनिषदों, पुराणों, गीता तथा स्तोत्र साहित्य में अलंकारों का उपयोग श्रद्धा, भक्ति, आध्यात्मिक अनुभव तथा दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के उद्देश्य से किया गया।

धार्मिक ग्रंथों में अलंकारों के माध्यम से जटिल दार्शनिक अवधारणाओं को सरल, सरस और प्रभावपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे वे सामान्य जनमानस के लिए भी सहज रूप से ग्रहणीय बन सकें। धार्मिक साहित्य में प्रयुक्त अलंकारों ने

समाज में सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, कर्तव्यपरायणता तथा धर्मनिष्ठा जैसे मूल्यों की स्थापना और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।⁴ इस प्रकार अलंकार धार्मिक चेतना और सांस्कृतिक परंपरा के संवाहक के रूप में कार्य करते रहे।

सामाजिक जीवन में अलंकारों का महत्व:

प्राचीन भारतीय समाज में अलंकारों का प्रभाव केवल साहित्यिक और धार्मिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं था, बल्कि उनका प्रभाव व्यापक सामाजिक जीवन में भी दिखाई देता है। लोकगीतों, लोककथाओं, आख्यानों, विवाह गीतों, उत्सवों तथा लोकपरंपराओं में अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग होता था। इससे स्पष्ट होता है कि अलंकार केवल विद्वानों और कवियों की अभिव्यक्ति का साधन नहीं थे, बल्कि जनसामान्य की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का भी महत्वपूर्ण माध्यम थे।

सामाजिक संबंधों, पारिवारिक जीवन, प्रेम, करुणा, त्याग, सहयोग तथा मानवीय संवेदनाओं को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करने में अलंकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इनके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन, उनकी भावनाओं, आकांक्षाओं तथा सांस्कृतिक अनुभवों का सजीव चित्रण किया गया। परिणामस्वरूप साहित्य और समाज के मध्य एक गहरा और जीवंत संबंध



स्थापित हुआ, जिसने भारतीय संस्कृति को निरंतर समृद्ध और सशक्त बनाया।

प्राचीन भारतीय समाज में उपमा अलंकार का स्थान:

प्राचीन भारतीय साहित्य में उपमा अलंकार को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। यह अलंकार भारतीय समाज की प्रकृति-प्रधान जीवन-दृष्टि तथा सौंदर्यबोध का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय कवियों ने प्रकृति के विविध उपादानों, प्राकृतिक दृश्यों तथा सांस्कृतिक प्रतीकों को आधार बनाकर मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया।

उपमा अलंकार के माध्यम से समाज की सौंदर्य-चेतना, प्रकृति-प्रेम, धार्मिक आस्था तथा सांस्कृतिक आदर्शों को कलात्मक अभिव्यक्ति मिली। इस अलंकार ने साहित्य को सहजता, सरसता और संप्रेषणीयता प्रदान की, जिसके कारण साहित्य जनसामान्य के लिए अधिक ग्राह्य और लोकप्रिय बन सका।⁵ प्राचीन भारतीय साहित्य में उपमा अलंकार की व्यापकता तत्कालीन समाज की कलात्मक संवेदनशीलता और प्रकृति के प्रति उसके गहरे लगाव को दर्शाती है।

रूपक अलंकार और सामाजिक आदर्श:

प्राचीन भारतीय समाज आदर्शवादी मूल्यों पर आधारित था। साहित्य में आदर्श राजा, आदर्श नारी, आदर्श पुत्र, आदर्श गुरु तथा आदर्श समाज

की अवधारणाओं को विशेष महत्व दिया जाता था। इन आदर्शों की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति में रूपक अलंकार की महत्वपूर्ण भूमिका रही। रूपक के माध्यम से व्यक्तियों, विचारों और मूल्यों को उच्च प्रतीकों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया गया, जिससे उनकी महत्ता और प्रभावशीलता में वृद्धि हुई।

रूपक अलंकार ने सामाजिक और नैतिक आदर्शों को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य किया। इसके माध्यम से शासकों, वीरों, धर्माचार्यों तथा आदर्श चरित्रों को उच्च मानवीय गुणों के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। परिणामस्वरूप समाज में नैतिक चेतना, कर्तव्यबोध तथा आदर्श जीवन-मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना विकसित हुई।

अनुप्रास और भारतीय सांस्कृतिक परंपरा:

अनुप्रास अलंकार भारतीय साहित्य की संगीतात्मक और श्रव्य परंपरा से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्राचीन भारत में साहित्य, संगीत और वाचन-कला का घनिष्ठ संबंध था। वैदिक मंत्रों, स्तोत्रों, धार्मिक रचनाओं तथा काव्य साहित्य में ध्वनि-सौंदर्य को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। अनुप्रास के प्रयोग से भाषा में लय, माधुर्य, प्रवाह और श्रवण-सुख की वृद्धि होती थी।

धार्मिक अनुष्ठानों तथा लोकपरंपराओं में अनुप्रास के प्रयोग ने साहित्य को अधिक प्रभावशाली और स्मरणीय बनाया। इसी कारण यह अलंकार भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का एक



महत्वपूर्ण अंग बन गया।⁶ अनुप्रास ने न केवल साहित्यिक सौंदर्य को बढ़ाया, बल्कि मौखिक परंपराओं के संरक्षण और प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यमक और श्लेष :

बौद्धिक परंपरा के प्रतीक:

प्राचीन भारतीय समाज ज्ञान, विद्वत्ता और बौद्धिक उत्कृष्टता को विशेष महत्व देने वाला समाज था। इसी कारण साहित्य में ऐसे अलंकारों का विकास हुआ जो भाषा की सूक्ष्मता, गहराई और कलात्मकता को व्यक्त कर सकें। यमक और श्लेष ऐसे ही अलंकार हैं, जिन्होंने भारतीय साहित्य को बौद्धिक ऊँचाई प्रदान की।⁵

इन अलंकारों के माध्यम से साहित्य में बहुस्तरीय अर्थ, गूढ़ संकेत तथा चिंतन की गहराई उत्पन्न हुई। संस्कृत साहित्य के अनेक ग्रंथों में यमक और श्लेष का अत्यंत परिष्कृत और कलात्मक प्रयोग देखने को मिलता है। इन अलंकारों ने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहने दिया, बल्कि उसे बौद्धिक विमर्श और चिंतन का माध्यम भी बनाया।⁷ इनके माध्यम से भारतीय विद्वानों की भाषिक प्रतिभा, तर्कशक्ति, कल्पनाशीलता तथा साहित्यिक कौशल का उत्कृष्ट परिचय प्राप्त होता है।

उत्प्रेक्षा और कल्पनाशीलता:

प्राचीन भारतीय समाज केवल धार्मिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टि से ही समृद्ध नहीं था, बल्कि उसमें अद्भुत कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मक चेतना भी विद्यमान थी। भारतीय साहित्य में उत्प्रेक्षा अलंकार का विकास इसी कल्पनाशील प्रवृत्ति का परिणाम माना जा सकता है। यह अलंकार कवि की रचनात्मक शक्ति, सूक्ष्म संवेदनशीलता तथा भाव-जगत की व्यापकता को अभिव्यक्त करने का प्रभावी माध्यम था। इसके द्वारा साहित्य में ऐसे भावों और अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी गई, जिन्हें सामान्य वर्णन के माध्यम से पूर्णतः व्यक्त करना संभव नहीं था।

उत्प्रेक्षा अलंकार ने साहित्य को भावनात्मक गहराई, कलात्मक विस्तार तथा कल्पना की नवीन उड़ान प्रदान की। इसके माध्यम से कवियों ने प्रकृति, मानव जीवन, प्रेम, विरह, आध्यात्मिक अनुभूतियों तथा सामाजिक परिस्थितियों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया। इस अलंकार ने साहित्य को केवल वर्णनात्मक न बनाकर संवेदनात्मक और अनुभूतिपरक स्वरूप प्रदान किया। परिणामस्वरूप भारतीय साहित्य में सौंदर्यबोध, भावप्रवणता और कलात्मकता का अद्भुत विकास हुआ तथा साहित्य जनमानस के हृदय तक पहुँचने में अधिक सक्षम बन सका।



अतिशयोक्ति और नायक-परंपरा:

प्राचीन भारतीय समाज में वीरता, त्याग, धर्मपालन, कर्तव्यनिष्ठा तथा आदर्शवाद को अत्यधिक महत्व प्रदान किया जाता था। समाज के लिए प्रेरणास्रोत माने जाने वाले वीर पुरुषों, राजाओं, ऋषियों तथा धार्मिक व्यक्तित्वों के गुणों का वर्णन साहित्य में विशेष स्थान रखता था। इन महान व्यक्तित्वों के आदर्श चरित्र और असाधारण कार्यों को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करने के लिए अतिशयोक्ति अलंकार का व्यापक उपयोग किया गया।⁶

अतिशयोक्ति अलंकार के माध्यम से महाकाव्यों, पुराणों तथा राजकीय प्रशस्तियों में नायकों के साहस, पराक्रम, उदारता और लोककल्याणकारी कार्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया गया। इसका उद्देश्य केवल प्रशंसा करना नहीं था, बल्कि समाज के समक्ष आदर्श जीवन-मूल्यों को स्थापित करना भी था। इस प्रकार अतिशयोक्ति अलंकार ने भारतीय समाज में आदर्श चरित्रों के प्रति सम्मान, श्रद्धा तथा अनुकरण की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही, इसने साहित्य को ओज, प्रभाव और प्रेरणात्मक शक्ति प्रदान की।

संस्कृत साहित्य और अलंकारों का विकास:

संस्कृत साहित्य में अलंकार सिद्धांत का क्रमिक और व्यवस्थित विकास भारतीय साहित्यिक

परंपरा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रारंभिक काल में अलंकारों को मुख्यतः काव्य की शोभा और अभिव्यक्ति की प्रभावशीलता बढ़ाने वाला तत्व माना जाता था, किंतु कालांतर में वे स्वतंत्र साहित्यिक चिंतन और आलोचना के महत्वपूर्ण आधार बन गए। भारतीय काव्यशास्त्र के विकास के साथ-साथ अलंकारों की अवधारणा भी अधिक परिष्कृत और व्यापक होती गई।

आचार्य भामह ने अलंकार को काव्य का प्रधान तत्व मानते हुए उसकी साहित्यिक महत्ता को स्थापित किया। दंडी ने काव्य-सौंदर्य और अभिव्यक्ति की दृष्टि से अलंकारों की उपयोगिता को रेखांकित किया। वामन ने रीति सिद्धांत के माध्यम से शैली और अभिव्यक्ति की विशिष्टता पर बल दिया, जबकि आनंदवर्धन ने ध्वनि सिद्धांत के द्वारा काव्य में निहित गूढ़ अर्थों और भावों की व्याख्या करते हुए अलंकारों को अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन माना। मम्मट ने विभिन्न अलंकारों का व्यवस्थित वर्गीकरण प्रस्तुत कर भारतीय काव्यशास्त्र को एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार प्रदान किया। इस प्रकार संस्कृत साहित्य में अलंकार सिद्धांत निरंतर विकसित होता रहा और भारतीय साहित्यिक चिंतन की एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में स्थापित हुआ।⁷



प्राचीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना और अलंकार:

अलंकार प्राचीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक मूल्यों तथा जीवन-दर्शन के सशक्त अभिव्यक्ति-माध्यम थे। इनके माध्यम से साहित्यकारों ने समाज की धार्मिक आस्थाओं, नैतिक आदर्शों, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक संरचनाओं तथा सांस्कृतिक परंपराओं का प्रभावशाली चित्रण किया। अलंकारों ने साहित्य को केवल सौंदर्य ही प्रदान नहीं किया, बल्कि उसे समाज और संस्कृति का जीवंत दस्तावेज भी बनाया।

भारतीय संस्कृति में सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, त्याग, सहिष्णुता, धर्मपालन तथा लोकमंगल जैसे मूल्यों को विशेष महत्व प्राप्त था। साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न अलंकारों ने इन आदर्शों को जनमानस तक पहुँचाने तथा उन्हें सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठित करने का कार्य किया। परिणामस्वरूप साहित्य सामाजिक जागरण, सांस्कृतिक संरक्षण तथा नैतिक मूल्यों के प्रसार का प्रभावी माध्यम बन सका। अलंकारों के माध्यम से भारतीय समाज की सांस्कृतिक निरंतरता और वैचारिक समृद्धि को भी सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ।⁸

निष्कर्ष:

प्राचीन भारतीय समाज में अलंकारों का महत्व अत्यंत व्यापक, गहन और बहुआयामी था।

वे केवल साहित्यिक सौंदर्य-वर्धन के साधन नहीं थे, बल्कि सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक अभिव्यक्ति के प्रभावशाली माध्यम भी थे। वैदिक साहित्य से लेकर उपनिषदों, पुराणों, संस्कृत महाकाव्यों तथा उत्तरवर्ती काव्य परंपराओं तक अलंकारों का निरंतर विकास हुआ और उन्होंने भारतीय साहित्य को समृद्ध, प्रभावशाली तथा कलात्मक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अलंकारों के माध्यम से प्राचीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक आस्था, नैतिक मूल्य, सामाजिक आदर्श तथा सौंदर्यबोध को अभिव्यक्ति मिली। उन्होंने भाषा को अधिक सशक्त, प्रभावपूर्ण और कलात्मक बनाया तथा साहित्य को जनजीवन से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। साथ ही, अलंकारों ने भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं, नैतिक मूल्यों और दार्शनिक चिंतन के संरक्षण एवं संवर्धन में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

अतः यह कहा जा सकता है कि अलंकार प्राचीन भारतीय समाज की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत के अमूल्य अंग हैं। वे केवल काव्य की शोभा के उपकरण नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक स्मृति, बौद्धिक परंपरा और रचनात्मक चेतना के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। प्राचीन भारतीय समाज को समझने तथा उसकी साहित्यिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए अलंकारों का अध्ययन आज भी उतना ही प्रासंगिक और आवश्यक है जितना प्राचीन काल में था।



संदर्भ सूची:

1. भामह, काव्यालंकार, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2008।
2. दंडी, काव्यादर्श, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2010।
3. ऋग्वेद, मंडल 1, सूक्त 50, गीता प्रेस, गोरखपुर।
4. आनंदवर्धन, ध्वन्यालोक, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 2009।
5. वामन, काव्यालंकार सूत्रवृत्ति, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 2007।
6. सत्यदेव चौधरी, भारतीय काव्यशास्त्र, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2015।
7. मम्मट, काव्यप्रकाश, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2011।
8. विश्वनाथ, साहित्यदर्पण, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2012।